AD EDUXIAN JOURNAL

A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal

Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 *E-ISSN: 3048-9751*

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर प्रतिबिम्बित धार्मिक विश्वास

अलीम अख्तर खाँ[1]

मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात दूसरी सदी ई० पू० तक भारत में छोटे–छोटे राज्यों का उदय हुआ। इन राज्यों में कौशांबी, मथुरा, तक्षशिला, कोसल, पांचाल, उज्जैन, विदिशा, महिष्मती, यौधेय, कुणिंद, औदुम्बर जैसे गणराज्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

इनमें से अधिकांश राज्यों का ज्ञान यहाँ की मुद्राओं से होता है। क्योंकि कुछ मुद्राएँ लेखयुक्त हैं और अपनी अपनी पहचान एवं नाम के साथ अंकित की गयी है। उल्लेखनीय है कि इन मुद्राओं के पुरोभाग तथा पृष्ठभाग दोनों पर देवी–देवताओं तथा उनके प्रतिकों का अंकन प्राप्त होता है।

इस प्रकार ये जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राएँ निदन्देह तत्कालीन समाज में फैले हुए धार्मिक विश्वासों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतरू सफल दिखायी पड़ती है। उनमें से कुछ मुख्य देवी–देवता एवं प्रतीक चिन्हों की व्याख्या निम्न अंशों में प्रस्तुत है।

कार्तिकेयः–

कार्तिकेय का अंकन अधिकांशत यौधेय गणराज्य के सिक्कों पर प्राप्त होता है। यौधेय, पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश के आसपास दीर्घ काल तक अस्तित्व में रहे है। पाणिनी की अष्टाध्यायी में इन्हें आयुधजीवी कहा गया है। इनका प्रमुख कार्य युद्ध करना था। अतएव इन्होंने युद्ध के देवता स्कन्ध कार्तिकेय को अपनी मुद्राओं पर स्थान प्रदान किया। कार्तिकेय को दैवीय सेना का सेनापति कहा गया। अतः यह आवश्यक हो गया था कि युद्ध प्रेमी यौधेय गण के लोग स्कन्ध कार्तिकेय को अपना इष्ट देवता मानते है।

यौधेय मुद्राओं के अग्रभाग पर भागवत स्वामिनों ब्रहमनस्यदेवस्य छः मुखी दोनों रूपों में दर्शाये गये है। अधिकांश मुद्रा पर स्कन्ध कार्तिकेय को हाथ में भाला लिए प्रदर्शित किया गया है जो कि शक्ति का परिचायक है। इस प्रकार यौधेय मुद्रा तत्कालीन समाज में प्रचलित युद्ध देवता स्कन्ध कार्तिकेय के प्रभुत्व को दर्शाती है।

मयूरः– भारतीय जनमानस तथा प्रतिमा–शास्त्रीय ग्रन्थों में मयूर को युद्ध देवता स्कन्ध कार्तिकेय का वाहन बताया गया है। यौधेय गण की मुद्राओं पर मयूर पक्षी का भी अंकन प्राप्त होता है।[1] एक यौधेय

[1]भुतपूर्व शोधकर्ता, दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश। मोबाइलः 8299822641, इमेलः alim14081991@gmail.com

मुद्रा पर किसी एकमुखी पुरुष देवता का अंकन प्राप्त होता है। उसी मनुष्य के पैर के पास एक पक्षी का अंकन प्राप्त हुआ है।[2] इस पुरुष देवता की आकृति को ए०सी० बनर्जी महोदय स्कन्ध कार्तिकेय का अंकन स्वीकार करते है और उसके पैर के पास बने या अंकित पक्षी को इन्होंने मयूर बताया है जो कार्तिकेय का वाहन था।[3]

स्कन्ध कार्तिकेय को सौर्य पुजा से जुडने का एक और प्रबल साध्य यौधेय मुद्रा पर स्थानक स्थिति में प्रदर्शित कार्तिकेय को पदम के साथ दर्शाया गया है। [4]इस पर ब्रह्मदेवस्य का स्पष्ट लेख प्राप्त हुआ है। जो स्कन्ध कार्तिकेय की सौर्य उत्पप्ति के सिद्धान्त को पुष्ट करता है। [5]स्पष्टत मुद्रा संचालक अधिकारी यह प्रदर्शित करना चाहता था कि स्कन्ध कार्तिकेय सौर्य मण्डल से भी संबन्धित है।

देवसेनाः–

भारतीय परंपरा में देवसेना को स्कन्ध कार्तिकेय कि पत्नी स्वीकार किया गया है। कई स्थलों पर स्कन्ध कार्तिकेय को देवसेनापति कहकर संबोधित किया है। यौधेय मुद्रा के पृष्ठ भाग पर एक षडमुखी देवी का अंकन प्राप्त है।[6] इस मुद्रा पर अंकित षडमुखी देवी को वासुदेवशरण अग्रवाल ने कार्तिकेय की पत्नी स्वीकार किया तथा बताया कि यह देवी षष्ठी के नाम से पूजी जाती है।[7] यौधेय मुद्राओं पर स्कन्ध कार्तिकेय के साथ देवसेना को भी एकमुखी[8] तथा षडमुखी[9] दिखाया गया है।

इस प्रकार यौधेय मुद्राओं पर अभिव्यंजित देवी जिसे षष्ठीध्षडमुखी तथा एक मुखी प्रदर्शित किया गया है वह देवी षष्ठी अथवा देवसेना है जिसे बच्चे की रक्षा करने वाली देवी के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह त्योहार अधिकांश शरद काल में षष्ठी पुजा के रूप में आज भी भारत में मनाया जाता है।

त्रिशूलः –

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर अनेकानेक प्रतिकांकन तथा देवांकन के साथ ही त्रिशूल का भी अंकन प्राप्त होता है। उल्लेखनीय है कि आहत मुद्राओं पर भी इस प्रकार का अंकन प्राप्त हुआ है।

ज्ञातव्य है कि जिस काल में शिव मूर्ति रूप का प्रदर्शन प्राप्त नहीं होता उस काल में उनके वाहन तथा आयुध को ही शिव का रूप माना गया है। जब शिव का अंकन प्राप्त होने लगा तब भी शिव आयुध का अंकन तथा शिव वाहन का अंकन होता रहा। यौधेय मुद्राओं के साथ ही आर्जुनायन, मालव, उज्जैन आदि के सिक्कों पर भी त्रिशूल का अंकन प्राप्त होता है।[10]

इसके अतिरिक्त कुणिंद जन और औदुम्बर मुद्रा पर भी त्रिशूल का अंकन प्राप्त होता है। कौशांबी की ताम्र पर भी त्रिशूल का अंकन प्राप्त होता है, जिसके समीप वाममुखी वृषभ का अंकन किया गया है। [11]

वृषभः –

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर वृषभ का अंकन भी प्राप्त होता है। उल्लेखनीय है कि वृषभ का अंकन शिव के वाहन नंदी के रूप में होता है। अतरू वृषभ शिव का पशु रूपान्तरण माना जाता है।[12] वृषभ का अंकन यौधेय, आर्जुनायन तथा कुणिंद जन की मुद्राओं पर प्राप्त होता है।

उल्लेखनीय है कि मौर्य या मौर्यात्तर काल में वृषभ का अंकन ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मों में समान रूप से दृष्टिगत होता है। बौद्ध धर्म में वृषभ को महात्मा बुद्ध के साथ संबंध किया गया है। जबकि जैन धर्म में प्रथम तीर्थकार ऋषभनाथ को पशु स्वरूप के लिए वृषभ का अंकन किया जाता है। ब्राह्मण धर्म में वृषभ को कालांतर में शिव वाहन के रूप में स्थायित्व प्राप्त हुआ। जबकि इससे पहले वैदिक काल में वृषभ सूर्य प्रतीक के रूप में अपनाया गया है। [13]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि वृषभ को शिव वाहन नंदी के रूप में इतनी लोकप्रियता मिली कि ने केवल भारतीय शासकों के सिक्कों पर अपितु विदेशी शासकों के सिक्कों पर भी शिव के प्रतीक रूप में वृषभ का अंकन होने लगा। हूण शासक मिहिरकुल की मुद्रा पर भी शिव के प्रतीक स्वरूप वृषभ का अंकन प्राप्त होता है। इस प्रकार जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर अभिव्यंजित वृषभ न केवल धार्मिक दृष्टि से अपितु कलात्मक दृष्टि से भी महत्व रखता है।

शिवः –

प्राचीन भारत में जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर शिव का अंकन प्रथम स्पष्ट अंकन माना जाता है। उल्लेखनीय है कि "शैवधर्म" जनजातियों में अधिक लोकप्रिय रहा हैरू अतरू उनकी मुद्रा पर शिव का अंकन होना स्वाभाविक है। जिस प्रकार यौधेय मुद्राओं पर कार्तिकेय का अंकन निर्विवाद रूप में प्राप्त होता है और गुप्त मुद्राओं पर वैष्णव धर्म से संबन्धित तथ्य प्रामाणिक रूप से प्राप्त होते है, उसी प्रकार जनपदीय एवं जनजातियों में बहु प्रचलित देवता "शिव" का अंकन भी बहुतायत से प्राप्त होता है।

शिव का अर्थ कल्याणकारी होता है। जनजातियों ने प्रारम्भिक अवस्था में शिव की उपासना अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु किया। प्रारम्भ में शिव का स्वरूप प्रतिकात्मक था, जिन्हें लोग उपासना द्वारा खुश करते थे। भगवान शिव जनपदीय एवं जनजातीय राज्यों में एक महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय देवता थे। ऐसी परिस्थिति में शिव के आयुध तथा वाहन को शिव स्वरूप मानकर उपासना का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। कुणिंद मुद्राओं पर शिव का अंकन इसी प्रतीकांकन द्वारा हुआ है।[14]

उज्जयिनी अथवा अवन्ति की ताम्र मुद्रा के पुरोभाग पर भी दंड एवं कमंडल के साथ जटा–जुटधारी देव की आकृति प्राप्त होती है।[15] औदुम्बर की मुद्राओं पर भी शिव का अंकन प्राप्त होता है। डॉ० राजवंत

राव ने भी औदुम्बर से प्राप्त मुद्रा अंकन को शैव धर्म से संबंध बताया है। इस प्रकार जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर अभिव्यंजित धार्मिक विश्वासों में शैव धर्म के तत्त्व विद्यमान दिखायी पड़ते है। इस प्रकार प्रथमतः जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर शिव का प्रत्यक्ष एवं प्रभावी अंकन होता है।

लक्ष्मीः –

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर भी देवी–देवताओं की भांति देवी लक्ष्मी का भी अंकन प्राप्त होता है। अर्जुनायन की मुद्रा के पृष्ठभाग पर देवी लक्ष्मी का मानवरूप में प्रथम अंकन प्राप्त होता है। इस मुद्रा पर लक्ष्मी को एक वृक्ष के साथ प्रदर्शित किया है।[16]

इसी तरह का अंकन कुणिंद जनपद से प्राप्त प्रथम शताब्दी ई० पू० की रजत एवं ताम्र मुद्राओं पर भी कमल को हाथ में धारण किए हुए देवी दिखायी पड़ती है। यह पुष्प देवी के दाहिने हाथ में प्रदर्शित किया गया है। देवी का बाया हाथ कटि विन्स्यत प्रदर्शित किया गया है।[17] यह अंकन देवी लक्ष्मी के पशु स्वरूप का अंकन प्रतीत होता है।

उल्लेखनीय है कि देवी लक्ष्मी वैभव तथा सौभाग्य की देवी एवं संपत्ति तथा ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी के रूप मेम मान्य हैं। उज्जयिनी की मुद्रा पर देवी लक्ष्मी को हस्ति द्वारा अभिषिक्त स्थिति में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें किनारे पर खड़ी हस्ति देवी लक्ष्मी को जलाभिषेक करा रही है। एक तरफ स्वास्तिक का चिन्ह बनाया गया है। लक्ष्मी का यह अंकन मुद्रा के पुरोभाग पर प्राप्त होता है। इस प्रकार जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर अभिव्यंजित धार्मिक विश्वासों में लक्ष्मी का अंकन प्रमुख था।

हस्ति –

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर हस्ति का अंकन भी प्राप्त होता है है। जनपदीय आहत मुद्राओं यथा–पांचाल[18] कोसल[19] चेदि [20]आन्ध्र[21] आदि जनपदों के सिक्कों पर वामाभिमुख हस्ति का अंकन प्राप्त हुआ है। [22]

तक्षशिला,[23] एरण,[24] उज्जैनी,[25] अर्जुनायन,[26] औदुम्बर,[27] यौधेय[28] आदि के सिक्कों पर भी हस्ति का अंकन प्राप्त होता है। भारतीय धर्म दर्शन में हस्ति को विभिन्न देवी–देवताओं से संबंध किया गया है। भारत में हस्ति को दैवीय शक्ति और आसुरी शक्ति दोनों रूपों में उल्लेखित किया गया है। गजासूर नामक राक्षस का वध शिव द्वारा किया गया। कालांतर में हस्ति इन्द्र के वाहन अर्थात ऐरावत के रूप में स्थायित्व को प्राप्त हुआ। हस्ति वैभव एवं सौभाग्य का सूचक बताया गया है। अतः इसे श्री अथवा लक्ष्मी के साथ भी संबंध किया गया है। बौद्ध एवं जैन ग्रंथ में भी हस्ति का विशेष महत्व प्रदर्शित किया गया है। बौद्ध धर्म

में हस्ति को महात्मा बुद्ध के जन्म का प्रतीक स्वीकार किया गया है। अतः बौद्ध धर्म में भी हस्ति को धार्मिक महत्व प्रदान किया गया है।

इस प्रकार विभिन्न भारतीय देवी–देवताओं के साथ हस्ति का मुद्रांकन उसकी धार्मिक महत्ता को ही प्रकट करता है।

सूर्य –

जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर सूर्यांकन भी प्राप्त होता है। सूर्यांकन स्पष्ट करता है कि तत्कालीन समाज मैं भी सूर्य पुजा प्रचलन में थी और लोग सूर्य पूजा तथा उपासना किया करते थे। अवन्ति से एक सिक्का प्राप्त हुआ है, जिस पर एक मानवाकृति कोट अथवा अन्य वस्त्र के साथ प्रदर्शित किया गया है। इस देवाकृति के आसपास स्वास्तिक तथा वृषभ का अंकन भी प्राप्त होता है।[29] इस आकृति के साथ ही एक सूर्यांकन एवं चंद्रांकन भी प्राप्त होता है। इस आकृति को सूर्य आकृति कहा गया है।[30] ज्ञातव्य है कि यह अंकन सूर्य का मानव रूप में प्राप्त हुआ है, जो पहले नहीं दिखायी पड़ता है।

उज्जैनी से प्राप्त मुद्राओं पर भी सूर्यांकन प्राप्त होता है।[31] इन दोनों जनों की मुद्राओं का गहन अध्ययन तत्कालीन समाज में सूर्य पूजा के साक्ष्य को प्रस्तुत करता है।[32] अवन्ति प्राचीन काल से ही सूर्य पूजा के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ सूर्योपासना सौर्य संप्रदाय के रूप में की जाती थी। इसके अलावा पांचाल राज्य के शासक भानुमित्र और सूर्यमित्र के सिक्कों पर सूर्य का अंकन प्राप्त होता है।

इस प्रकार जनपदीय एवं जनजातीय मुद्राओं पर अभिव्यंजित धार्मिक प्रतीक चिन्हों में सूर्य को महत्वपूर्ण स्थान मिला, जो यह सिद्ध करता है कि अवन्ति के स्थानीय क्षेत्र में सौर्य संप्रदाय का प्रभाव बढ़ गया था और सूर्य पूजा अपने चरम सीमा पर थी।

संदर्भ सूची–

- जे०एन०एस० आई० 11 1949 पृष्ठ संख्या–51
- जे० बी० ओ० आर० एस० 20 1934 पृष्ठ संख्या–177
- जे० बी० ओ० आर० एस० 20 1934 पृष्ठ संख्या–178
- जे०एन०एस० आई०–द्वितीय, 140 पृष्ठ संख्या–111 प्लेट 10
- साधु शरन सिंह– अली क्वायन्स ऑफ नार्दन इंडिया, पृष्ठ संख्या–47
- जे०एन०एस० आई०–बी० एम० सी० ए० आई० पृष्ठ संख्या– 270 वर्ग 3 आई० एम० सी० 9 द्वितीय, प्लेट 3

- जे०एन०एस० आई० भाग 6, पृष्ठ संख्या–30–20
- वी०एस० अग्रवाल– जे०एन०एस० आई०–खण्ड 5 पृष्ठ संख्या–29
- वी०एस० अग्रवाल– जे०एन०एस० आई०– फलक–5 पृष्ठ संख्या–29
- साधु शरन सिंह– अली क्वायन्स ऑफ नार्दन इंडिया, पृष्ठ संख्या–50
- बी०एम० सी०, पृष्ठ संख्या–14–13
- राजवंत राव– प्राचीन भारतीय मुदराएँ,पृष्ठ संख्या–64–65
- कनिगहम, पृष्ठ संख्या– 68 प्लेट–4–5–1
- अथर्ववेद–13–2.4.2
- पूर्वोक्त– राजवंत राव, पृष्ठ संख्या–84
- पी०एल०गुप्त–भारत के पूर्व कालिक सिक्के, पृष्ठ संख्या– 51
- कनिगहम, प्लेट 8–20 बी०एम०सी०ए०आई०प्लेट 82 पृष्ठ संख्या–121
- सी०ए०आई०,प्लेट 5 बी०एम०सी०ए० आई० प्लेट 22–23 पृष्ठ संख्या–72
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–1–2
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–2
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–37–38
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–63–70
- पी०एल०गुप्ता–अमरावती होर्ड पंचमार्क्ड़ क्वायन्स
- पूर्वोक्त–एलन,पृष्ठ 225–26 फ०–32–22
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–18–19–पृष्ठ संख्या–140–44
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–36–6–9 पृष्ठ संख्या–261–62
- पूर्वोक्त–स्थिम,पृष्ठ–166 संख्या–2
- पूर्वोक्त–एलन,फ.14–15 पृष्ठ–123–128
- पी०एल०गुप्ता– पंचमार्क्ड़ क्वायन्स ऑफ एन्सियंट इंडिया–फ०–39–11–19 पृष्ठ–267
- पी०एल०गुप्ता,भारत के पूर्व कालिक सिक्के,मुद्रा स०,पृष्ठ–155–56
- पी०एल०गुप्ता,भारत के पूर्व कालिक सिक्के,मुद्रा स०,पृष्ठ–65
- पी०एल०गुप्ता,भारत के पूर्व कालिक सिक्के,मुद्रा स०,पृष्ठ–134